विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय- हिंदी ***दिनांक-21/05/2020***
वर्ग-पंचम ***वर्ग-शिक्षिका — नीतू कुमारी***

पाठ-1 (सरस्वती वंदना)

सुप्रभात बच्चों,

आज की कक्षा में आप सबसे पहले श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय जानेंगे तथा सरस्वती वंदना कविता का भावार्थ जानेंगे। जो इस प्रकार है :—

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का परिचय—

—जन्म :-21 फ़रवरी 1896 को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक देशी राज्य है।
— कुल निवास :- उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का गढ़कोला नामक गाँव।
— शिक्षा :-हाई स्कूल तक संस्कृत , हिंदी और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन के कार्यक्षेत्र 1918 से 1922 तक महिषादल राज्य की सभा। उसके बाद सम्पादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किए।

भावार्थ :—

वर दे वीणावादिनी माँ सरस्वती की वंदना है। जिसमें निराला जी देश की जड़ता तोड़कर देश को नयी ऊर्जा के लिए सरस्वती माँ से वंदना कर रहें हैं। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला इस कविता में, "हे माँ सरस्वती! हमें वरदान दीजिए, हे माँ हम सब में नया का ज्ञान रूपी अमृत मंत्र भर दीजिए।

हे माँ सरस्वती ! हमारे हृदय में स्थित अंधकार की जगह प्रकाश भरकर ,इसे जगमग कर दीजिए। हे माँ, सरस्वती! देश की जड़ता भंग कर और देश में नयी गति , नया लय , नया ताल, नया स्वर दीजिए। पृथ्वी को नयी गति दीजिए, आकाश में विचरण करने वाले पक्षियों को नया स्वर दीजिए।
हे माँ, सरस्वती! हमें वरदान दीजिए।

बच्चों, दी गयी अध्ययन - सामग्री को पढ़ें तथा पढ़कर समझने का प्रयास करें और वर्ग-कार्य कॉपी में लिखें।

गृहकार्य :—

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:—
(क) इस कविता के रचयिता का परिचय दें।
(ख) कवि माता सरस्वती से क्या प्रार्थना करते हैं?
(ग) ' नव' शब्द का बार - बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहतें हैं?
(घ) यह कविता कब लिखी गयी है ?